बसोहली चित्र शैली में चित्रित रसमंजरी लघु चित्रों का कलात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) आगरा से

चित्रकला में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. नमिता त्यागी

ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,

कला संकाय,

डी.ई.आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी

दयालबाग़, आगरा

शोध छात्रा

कविता

ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग

कला संकाय,

डी.ई.आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी

दयालबाग़, आगरा

संकाय प्रमुख :–

प्रो. जे.के. वर्मा

अध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग,

कला संकाय

विभागध्यक्ष :–

प्रो. रागिनी रॉय

ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग,

कला संकाय

2017

बसोहली चित्र शैली में चित्रित रसमंजरी लघु चित्रों का कलात्मक अध्ययन

विषय सूची :–

शोध संकल्पना

साहित्य पुर्नावलोकन

परिकल्पना

उद्देश्य

चर

कार्य प्रणाली :–

1– अनुसंधान अभिकल्प

2– प्रदत्त संकलन :–

अ– प्राथमिक स्त्रोत
ब– द्वितीय स्त्रोत

3– प्रतिदर्श

4– प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया

5–सीमाएँ

<u>शोध संकल्पना :–</u>

आदिकाल से अब तक कला अपने विभिन्न रूपों को प्रकट करती आई है, जिसमें लघु चित्रण परम्परा का सम्पूर्ण विश्व में अलग स्थान है। इस सन्दर्भ में भारतीय लघु चित्र शैली के अतुलनीय प्राचीन चित्रों का वर्णन उल्लेखनीय है। लघु चित्र बड़ी तीव्रता से 15वीं से 19वीं शताब्दी में भारत में बने। प्रारम्भ में लघु चित्रों का चित्रण ताड़पत्र, भोजपत्र तथा बसली तैयार करके किया जाता था। 14वीं शताब्दी में कागज का प्रचलन होने से लघु चित्रों को कागज पर भी बनाया गया और साथ ही साथ लघु चित्रों का अंकन कपड़े पर भी किया जाने लगा। भारत में लघु चित्रण की विभिन्न शैलियाँ विकसित हुई, जिनमें मुगल शैली, राजस्थानी शैली, पहाड़ी शैली तथा दक्षिणी शैली प्रमुख है।

पहाड़ी शैली 17वीं शताब्दी के आरम्भ में पंजाब और हिमाचल की सुरम्य घाटियों में पनपी। जिसमें इस शैली के उन्नत चित्र प्राप्त हुये थे। इन चित्रों में पहाड़ों का आत्मिक सौन्दर्य, वैभव और यौवन मुखरित था। 17वीं शती में चित्रकला के प्रति सम्राट औरंगजेब की उदासीनता और कट्टरता के कारण कलाकार आश्रय की खोज में पंजाब और जम्मू की पहाड़ियों के ठाकुर राजाओं की शरण में जा बसे और यहीं चित्र निर्मित किये। यह चित्र शैली 'पहाड़ी कलम' के नाम से जानी गई। पहाड़ी शैली की अनेक उपशैलियाँ भी विकसित हुई, जिनमें कांगड़ा, बसोहली, गुलेर, चम्बा, गढ़वाल आदि।

बसोहली रावी नदी की घाटी में स्थित एक छोटी सी नगरी है। बसोहली राज्य की स्थापना भोगपाल ने 1765 ई. में की थी और बसोहली चित्र परम्परा का आरम्भ राजा कृष्णपाल के काल में हुआ तथा इसका सर्वोत्तम विकास राजा कृपाल पाल के शासन में हुआ। इन्होंने बसोहली कलम के विकास में तन–मन–धन से कार्य किया। इनके समय में 'भानुदत्त' कृत एक सचित्र प्रति 'रसमंजरी' (1694–95ई.) तैयार की गई। भारत कला भवन वाराणसी के संग्रहीत लेख पत्र से ज्ञात होता है कि इस प्रति का निर्माण चित्रकार 'देवीदास' ने 'कृपालपाल' के लिये किया था। इसके

पश्चात् राजा 'मेदनी पाल' (1725–1736) व 'जित पाल' (1736–57) ने इस चित्र परम्परा को और अधिक पुष्ट किया।

प्राचीन काल से भारतीय लघु चित्र परम्परा साहित्य के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी थी। जिसके फलस्वरूप रागमाला, बारहमासा, गीत गोविन्द, रसिक प्रिया, कवि प्रिया इत्यादि काव्यों पर आधारित चित्र श्रृंखलाएँ निर्मित की गयी जो अपनी भाव योजना हेतु विश्व में प्रसिद्ध हुई। कलाकारों ने साहित्य में वर्णित अलौकिक अमूर्त भावनाओं को अपनी कार्य कुशलता और दक्षता से मूर्त रूप देकर दर्शकों को भाव–विभोर कर दिया था। रसमंजरी एक महान शास्त्रीय संस्कृत भाषा में लिखित महाकाव्य के रूप में वर्णित है। रसमंजरी 15वीं शती के महत्वपूर्ण अभिलेखों में से है जिसके माध्यम से हमें तत्कालीन उच्च वर्ग के सामाजिक जीवन की झाँकी मिलती है। संस्कृत कवि भानुदत्त ने प्रेम की सूक्ष्म, उद्वेलित, कोमल व दिव्य भावनाओं को प्राकृतिक वातावरण के प्रभाव के साथ वर्णित किया है। इसमें नायक एवं नायिकाओं को कृष्ण और राधा के सक्षम मानते हुये उनके पारलौकिक प्रेम का वर्णन है। चित्रकारों ने नायक और नायिकाओं को राधा–कृष्ण के रूप में इसलियें चित्रित किया है क्योंकि वह आदर्श प्रेम व प्रेमिका का निर्वाह उन्हीं के द्वारा सम्भव मानते है। इस ग्रन्थ में श्रृगांर के दोनों पक्षों संयोग और वियोग रस की प्रधानता है तथा प्रकृति का सुरम्य, मनमोहक व अकल्पनीय वर्णन किया गया है।

इन रसमंजरी लघु चित्रों का संग्रह भारत एवं विदेशों में कई स्थानों पर संग्रहीत है, जिनमें 'डोगरा आर्ट गैलरी' जम्मू, 'द म्यूजियम ऑफ फाइन आर्टस' बोसटन, 'द विक्टोरिया एण्ड अल्बर्ट म्यूजियम' लन्दन, 'द सेन्ट्रल म्यूयिम' लाहौर, 'द चन्ड़ीगढ़ म्यूजियम' चन्ड़ीगढ़ इत्यादि संग्रहालयों में रसमंजरी लघु चित्रों की श्रृंखला प्राप्त होती है। इन रसमंजरी चित्रों को आधार बनाकर मैंने अपने शोध हेतु इस विषय का चयन किया।

<u>सम्बन्धित साहित्य का पुर्नावलोकन :–</u> कला की प्राचीन धरोहर शोध कार्य के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य के पुर्नावलोकन हेतु मार्ग प्रशस्त करती है तथा शोध का अतीत से सम्बन्ध स्थापित करती है।

मैंने अपने शोध विषय चयन हेतु विभिन्न संग्रहालयों का भ्रमण किया। संग्रहालयों में संग्रहीत प्राचीन साहित्य के माध्यम से पहाड़ी शैलियों के बारे में पढ़ा। जिससे मुझे बसोहली शैली में निर्मित रसमंजरी लघु चित्रों के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ। इन रसमंजरी लघु चित्रों का संग्रह विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहीत है। संग्रहालयों में संग्रहीत रसमंजरी लघु चित्रों की श्रृंखला ने मुझे अत्यधिक प्रभावित तथा आकर्षित किया। इन चित्रों का अध्ययन करने के लिये मैंने 'भारतीय पुरातत्व विभाग' आगरा के पुस्तकालय का भ्रमण किया। इस विषय से सम्बन्धित सामग्री के लिये मैंने नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट–नई दिल्ली, राष्ट्रीय संग्रहालय–नई दिल्ली, आगरा यूनिवर्सिटी सेन्ट्रल लाइब्रेरी आगरा आदि का भ्रमण एवं पुस्तकालयों में पुस्तकों का गहन अध्ययन किया।

मैंने लेखक विश्व चन्द ओरी की पुस्तक 'On the origins of Pahari Painting', Publication Shimla, 1991. का अध्ययन किया, जिससे मुझे पहाड़ी लघु चित्रों की ऐतिहासिकता व प्राचीनता की जानकारी प्राप्त हुई। लेखक एम. एस. रन्धावा की पुस्तक 'Indian Miniature Painting', Publication New Delhi, 1981 तथा Basohli Painting', Publication Government of India, 1959 के अध्ययन से बसोहली के सन्दर्भ में तथा रसमंजरी के उद्भव एवं विकास के बारे में जाना। महेन्द्र वर्मा की पुस्तक 'भारतीय चित्रकला की परम्परा, प्रकाशन दिल्ली, 2006 से काव्य से सम्बन्धित अध्ययन प्राप्त किया। लेखक एम. एस. रन्धावा और एस.डी. भामरी की पुस्तक 'Basohli Paintings of the Rasamanjari' Publisher Abhinav Publications, 1981 से भानुदत्त कृत रसमंजरी के सन्दर्भ में तथा नायिकाओं के भेदों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किया।

इन सभी उपलब्ध स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर मुझे पहाड़ी शैली की ऐतिहासिकता, उसके लघु चित्रों के विषय से सम्बन्धित विविधता एवं शैलीगत व कलात्मक विशेषताओं का गहन अध्ययन प्राप्त हुआ। पहाड़ी शैली की उपशैली बसोहली में निर्मित रसमंजरी चित्रों की कुछ छाया प्रतियाँ भी मुझे देखने को मिली। अतः मैं रसमंजरी पर आधारित लघु चित्रों के कलापूर्ण,

काल्पनिक, भावपूर्ण चित्रों का विश्लेषण एवं अन्य पहाड़ी शैलियों पर इसके प्रभाव का विवेचन प्रस्तुत करूँगी।

परिकल्पना :– एक शेधकर्ता के लिये सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि शोध की परिकल्पना स्पष्ट एवं अर्थपूर्ण हो। शोध परिकल्पना के द्वारा हम अपने शोध के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से प्राप्त कर सके व शोध विषय पर केन्द्रित रह सके।

लघु चित्रण शैली की यह प्राचीन परम्परा रही है कि वह काव्य के साथ सदैव जुड़ी रही। पहाड़ी शैली के लघु चित्र अपनी स्थानीय विशेषताओं के कारण अपने बाह्य स्वरूप में काव्यगत विशेषताओं को प्रकट करते है। काव्य की सूक्ष्म कल्पनाओं को कलाकार सदैव अपने अन्तर्मन की भावनाओं के साथ प्रस्तुत करते है। इन चित्रों में तत्कालीन जीवन के साथ–साथ कलाकार की व्यक्तिगत भावनाऐं उसकी दक्षता भी निहित होती है।

बसोहली शैली में निर्मित रसमंजरी का चित्रण भी इसी आधार पर किया गया। तब यह आवश्यक है कि इन चित्रों में भी यह सभी विशेषताऐं निहित होंगी। इसी को आधार मानकर मैंने इन चित्रों के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक जीवन, कलाकार की रचनात्मक, सृजनात्मकता तथा चित्रों की भाव प्रवणता के अध्ययन को प्रस्तुत करूँगी।

उद्देश्य :– शोध विषय रसमंजरी लघु चित्रों का कलात्मक अध्ययन हेतु उद्देश्य इस प्रकार है–

1. रसमंजरी में निहित कला तत्वों का विश्लेषण व उनकी व्याख्या तथा इन्हीं के आधार पर रसमंजरी का कलात्मक विवेचन।

2. रसमंजरी में निहित प्राचीन समाज का दृष्टिकोण, उनका रहन–सहन, वेश–भूषा की जानकारी चित्रों के माध्यम से प्राप्त करना।

3. बसोहली निर्मित रसमंजरी लघु चित्रों का अन्य पहाड़ी शैलियों पर प्रभाव।

चर :–

- कला शिक्षक
- कला विद्यार्थी
- कला प्रशंसक एवं समीक्षक
- सहपाठी
- स्थानीय भ्रमण एवं अध्ययक्षों से साक्षात्कार
- विभिन्न कला पुस्तकालय एवं संग्रहालय
- इन्टरनेट

कार्य प्रणाली :–

1. **अनुसंधान अभिकल्प :–** मेरा शोध संग्रहालयों में संग्रहीत रसमंजरी लघु चित्रों के वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं कलात्मक अध्ययन पर आधारित होगा।

प्रदत्त संकलन :–

तथ्यों का एकत्रीकरण प्राथमिक व द्वितीय स्त्रोतों पर आधारित होगा।

- **प्राथमिक स्त्रोत :–** संग्रहालयों में संग्रहीत रसमंजरी लघु चित्रों का मौलिक चित्रण एवं सम्बन्धित स्थान का भ्रमण।
- **द्वितीय स्त्रोत :–** साक्षात्कार, लेख, पुस्तके, प्रकाशित पत्र,–पत्रिकाऐं, समाचार पत्र, वेबसाइट्स व संग्रहालयों के संग्रहकर्ता आदि।

प्रतिदर्श :– मेरे द्वारा संग्रहालयों से रसमंजरी लघु चित्रों का चयन किया जायेगा। यह लघु चित्र कला परम्परा का प्रतिनिधित्व करेंगे।

प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया :– मेरे प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया के अन्तर्गत अवलोकन, साक्षात्कार व संग्रहालयों में संग्रहीत छाया चित्रों के विश्लेषण पर आधारित होगा।

<u>**सीमा :–**</u> प्रत्येक शोध कार्य एक समय सीमा पर आधारित होता है। मैं शोध कार्य की सीमा अवधि एकत्रित प्रदत्तों के आधार पर कार्य पूर्ण करने का प्रयास करूँगी। शोध कार्य कला समीक्षकों के साक्षात्कार, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, अवलोकन व संग्रहालय आदि पर आधारित होगा।

बसोहली चित्र शैली में चित्रित रसमंजरी लघु चित्रों का कलात्मक अध्ययन

शोध संरचना

भूमिका :– लघु चित्रकला में काव्य का समन्वय एवं रसमंजरी।

प्रथम अध्याय :– भारतीय पहाड़ी लघु चित्रों का ऐतिहासिक परिचय।

द्वितीय अध्याय :– बसोहली शैली का उद्‌भव एवं विकास।

2.1– बसोहली शैली में रसमंजरी चित्रों का उद्‌भव।

2.2– नव रसों की व्याख्या।

तृतीय अध्याय :– रसमंजरी चित्रों में नायक और नायिकाओं के आधार पर वर्गीकरण।

3.1– रसमंजरी लघु चित्रों का भावात्मक विश्लेषण।

चतुर्थ अध्याय :– रसमंजरी लघु चित्रों का कला तत्वों के आधार पर विवेचन।

4.1– रेखा

4.2– रूप

4.3– रंग

4.4– तान

4.5– पोत

4.6– अन्तराल

4.7– रसमंजरी लघु चित्रों पर लोक तत्वों का प्रभाव।

पंचम अध्याय :– 5.1– रसमंजरी लघु चित्रों का अन्य पहाड़ी शैलियों पर प्रभाव।

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

- हिन्दी
- अंग्रेजी
- वेबसाइट्स
- चित्र सूची

परिशिष्ट :–

- विभिन्न कला समीक्षकों के विचार
- तकनीकी शब्दों का अर्थ
- समाचार पत्र

अनुसंधान अभिकल्प

भूमिका के अन्तर्गत लघु चित्रकला में काव्य का समन्वय व रसमंजरी का परिचय प्रस्तुत करूँगी। रसमंजरी प्राचीन भारत के सबसे प्रेरणादायक ग्रन्थों में से एक है, जिसने भारतीय चित्रकला को प्रेरित किया। पहाड़ी क्षेत्र में चित्रकला का प्रारम्भिक केन्द्र बसोहली था। जहाँ राजा कृपालपाल के संरक्षण में कलाकार देवीदास था, जिन्होंने सन् 1694 ई. में रसमंजरी चित्रों के रूप में लघु चित्रकला का निष्पादन किया। रसमंजरी शाब्दिक रूप से रस से भरा एक समूह है। भारतीय पौराणिक कथाओं में 9 रसों का उल्लेख है। जिन पर कला आधारित है। तिरहुत के भानुदत्त ने

15वीं शताब्दी में रसमंजरी की रचना की, जिसके अन्तर्गत नायक और नायिकाओं के वर्गीकरण तथा पारलौकिक प्रेम को दर्शाया गया है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत भारतीय पहाड़ी लघु चित्रों का ऐतिहासिक परिचय प्रस्तुत किया जायेगा। पहाड़ी शैली विभिन्न केन्द्रों में विकसित होने के कारण इसके अनेक भाग किये जा सकते है, जैसे– साहसिक और गहन बसोहली तथा नाजुक भावपूर्ण कांगडा शैली इसी के साथ–साथ गढ़वाल, जम्मू, चम्बा इत्यादि शैलियों को विकास हुआ। पहाड़ी शैली के चित्रों में प्रेम का विशिष्ट चित्रण दृष्टिगोचर होता है। राधा–कृष्ण के प्रेम के चित्रों के माध्यम से इनमें स्त्री–पुरूष प्रेम सम्बन्धों को बड़ी बारीकी और सहजता से दर्शाने का प्रयास किया गया है। रसमंजरी काव्य पर आधारित चित्रण कार्य बोहली में प्राप्त होता है, जो अत्यन्त भावपूर्ण है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत बसोहली शैली का उद्भव एवं विकास प्रस्तुत करते हुये बसोहली शैली में रसमंजरी लघु चित्रों के उद्भव एवं विकास का भी वर्णन करूँगी। बसोहली जिसका जन्म हिन्दु, मुगल तथा पहाड़ी शैलियों के समन्वय से हुआ है। यह हिन्दु परम्परा से अत्यधिक प्रभावित रही जिसमें विष्णु एवं उनके दशावतारों का चित्रण, रामायण, महाभारत, गीतगोविन्द पर आधारित चित्रों की रचना के साथ–साथ भानुदत्त कृत सचित्र रसमंजरी श्रृखंला भी चित्रित की गयी है, जिसमें राजा कृपालपाल व कलाकार देवीदास का महत्वपूर्ण योगदान था, क्योंकि इन्हीं के समय से रसमंजरी का उद्भव माना जाता है। इसी के अन्तर्गत नव रसों की भी व्याख्या पूर्ण रूप से करने का प्रयास करूँगी, क्योंकि रसमंजरी रसो से भरा एक समूह है।

तृतीय अध्याय के अन्तर्गत रसमंजरी चित्रों में नायक और नायिकाओं के आधार पर वर्गीकरण के साथ रसमंजरी लघु चित्रों का भावात्मक विश्लेषण पर भी अध्ययन करूँगी। नायिकाओं के विभिन्न भेदों जैसे– पराकिया नायिका, मुग्धा नायिका एवं प्रौढ़ा नायिका इत्यादि के भेदों का विस्तार पूर्वक अध्ययन करूँगी तथा चित्रों के भावात्मक पक्ष का अध्ययन करूँगी।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत चित्रों का कला तत्वों के आधार पर विवेचन, जिसमें कला के तत्व रेखा, रूप, रंग, तान, पोत, अन्तराल के माध्यम से चित्रों की विशेषताओं का अध्ययन करूँगी।

पंचम अध्याय के अन्तर्गत रसमंजरी का अन्य पहाड़ी शैलियों पर प्रस्तुत करूँगी।

उपसंहार के अन्तर्गत भारतीय लघु चित्रों में पहाड़ी शैली का योगदान बताते हुये रसमंजरी चित्रण का समकालीन कला में योगदान पर चर्चा करूँगी।

दिनांकः–

कविता

शोध छात्रा

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–</u>

- अग्रवाल, श्यामबिहारी : 1999, भारतीय चित्रकला का इतिहास, रूपशिल्प प्रकाशन इलाहाबाद।
- अग्रवाल, श्यामबिहारी : भारतीय चित्रकला और काव्य, किताब महल, इलाहाबाद, प्रथम संकरण।
- कुमार, सुधीर : 2001, रीतिकाव्य के विविध आयाम, ईशा ज्ञानदीप, दिल्ली।
- द्विवेदी, प्रेमशंकर : 2007, भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच.यू. वाराणसी–5, दूरदभाषा।
- वर्मा, महेन्द्र : 2006, भारतीय चित्रकला की परम्परा, भारतीय कला प्रकाशन दिल्ली।
- सतीश चन्द्र : 1936, भारतीय चित्रकला, बैलवेडियर प्रेस, इलाहबाद।
- त्रिवेदी, अशोक कुमार : 2008, हिन्दी काव्य साहित्य की महान विभूतियाँ, एस. आर. साइन्टीफिक पब्लिकेशन आगरा।

<u>BIBLIOGRAPHY:-</u>

- Agrawal, V.S. : 1961, Indian Miniature, An album, Archaeology Government of India, New Delhi
- Archer, W.G. : 1975, Pahari Miniatures, Publication Oxford uni. press
- Brown, Percy : 1947, Indian painting, Y.M.C.A. Publication house, Calcutta.
- Chaitanya, Krishna : 1984, A history of Indian Painting -Pahari Traditions, Publisher Shakti Malik Abhinav, Publication New Delhi.
- Chakraverty, Anjan : 1989, Indian Miniature Painting, Abhinav

Publication, New Delhi.

- Kari, Khandalvala : 1958, Pahari miniature painting, Bombay.
- Ohri, Vishwa Chandr : 1991, On the origins of Pahari painting, Shimla Indian Institute of advanced study.
- Randhawa, M.S : 1959, Basholi Painting, The Publication Government of India.
- Randhawa, M.S and Bhambri, S.D : 1981, Basholi Painting of the Rasamanjari, Publisher Abhinav Publications, Humanities Press Atlantic Highla
- Saroj, Rami : 2012, Pahari Chitrakala ka anusheelan, Kala prakashan Varanasi.
- Sharma,O.P. : 1974, Indian Miniature Painting (Exhibition compiled from the collection of the National Museum, New Delhi), Bibliotheque Royal Albert.
- Vishwa, Chander Ohri and Roy, c. Craven : 1998, Painting of the Pahari Schools, Marg Publication.

<u>INTERNET WEBSITES:-</u>

- http://www.google.co.in
- www. Nationalmuseumindia.gov.in
- www.ethnicpainting.com
- www.gltoday.in/basohli-painting/
- http://hi.wikipedia.org
- http://hi.wikipedia.org/wiki/uk;d&ukf;dk Hksn
- http://commons.wikimedia.org/wiki/catagoryrasamanjari

- Bhartadiscovery.org/india/ukf;dk Hksn
- www.encyclo.co.uk/meaning-of-rasamanjari
- www. Nationnewz.com/nationnew.aspx
- Mishraarived.blogspot.in/2009/12/blog-post26.html
- http://hi.wkipedia.org/wiki/ukf;dk

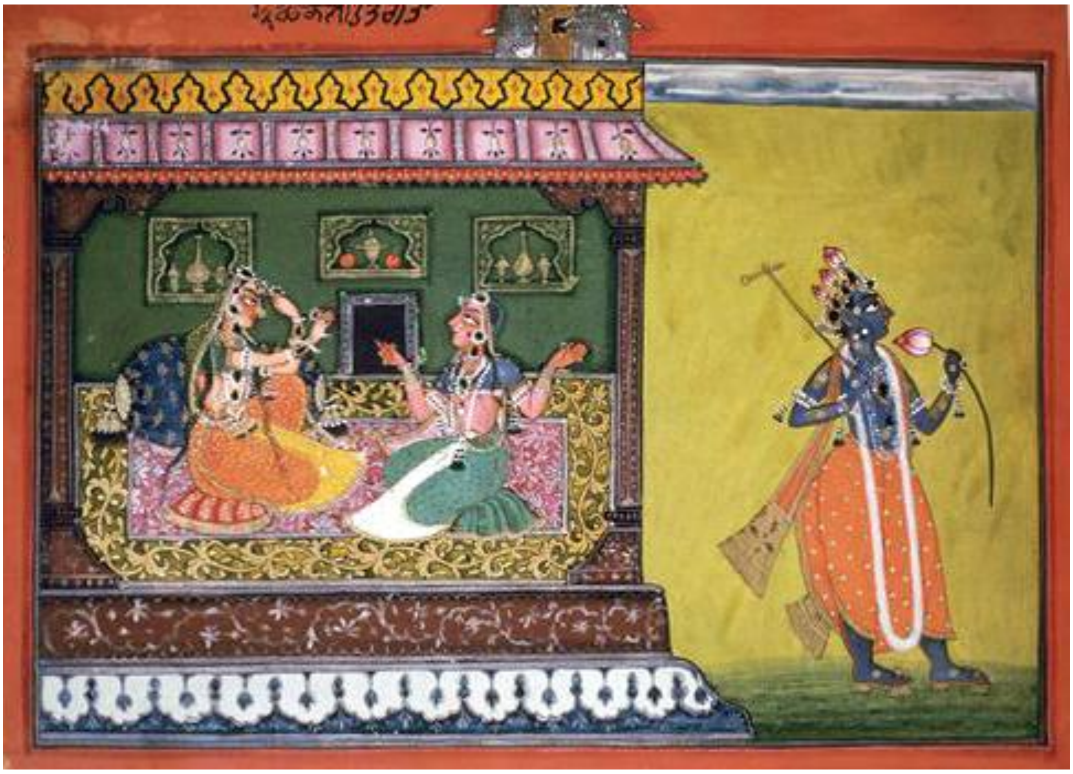

Figure-1- PRAUDHA PROSHITA-BHARTRIKA (Praudha Nayika whose husband is away), collection: Dogra Art Gallery, Jammu

Figure- 2- AJNATA-YAUVANA-MUGDHA (Nayika unconscious of her youth), collection: Dogra Art Gallery, Jammu

Figure- 3- MUGDHA-NAVODHA (Nayika newly wedded)
collection: Dogra Art Gallery, Jammu

Figure- 4- PRAUDHA-DHIRA-DHIRA (Mature Nayika who Expressesanger ironically and bitterly),
collection: Dogra Art Gallery,Jammu